

SHRI PRAVAKAR MAHARANA

Shri Pravakar Maharana is the President of the "KONARK KALA" and active instructor on Traditional Stone carving of this organisation. A person with determination uninterrupted hunt for creativity an innovation. Shri Maharana is renowned in traditional stone Sculpture for India at International level.

2. Born on September 2, 1960, Shri Maharana came from an artisan family near the famous Surya Temple of Konark in Odisha. From the childhood he had inclination towards drawings and paintings. He trained at the State Handicrafts Training Centre in Bhubaneswar in 1977. Later, he started his own production unit in Bhubaneswar in which many poor students are receiving training by getting free meals and accommodation. His continuous research for newness in the crafts, has contributed significantly to the promotion of traditional stone craft of Odisha. Shri Maharana excelled quickly in his profession he was conferred with state award in 1987 for his outstanding piece of work in stone carving on Surya narayan of Konark temple. He was bestowed with the prestigious national award on stone sculpture in 1992 for his magnificent craftsmanship in stone sculpture based on concept of "Kandarpa Hasti" kandarpa elephant imbibed from Mathura Vijaya.

3. Shri Maharana promoted to the stone sculpture of Odisha in more organised way. He has founded organizations in the name of Konark Kala,Utkal kala Handicrafts Cooperative Society and Pravakar Creative Art & Craft under which he has many plans to promote the traditional stone culture and practices in the state and protect the interest of stone carving artisans. Under his leadership, he has opened his own stone craft Museum in Bhubaneswar where he has display and demonstrates the stone craft of the state.

4. To uphold the tradition of Guru Sisya Parampara Shri Maharana has imparted training to four hundred artisans under the guru sisya parampara scheme with the support of the Government & on his own initiative. All of them are self employed and some of them even students work outside the country. Many of his students have contributed significantly to the construction of Askhyardham temple,New Delhi. Under his direction Sati Mat temple in Surat, Gujarat and Jagannath temple in Nigeria has been constructed, the Buddhist Guru Dalai Lama he has established many stone crafts in Himachal Pradesh and abroad.

5. Shri Maharana is the recipient of numerous awards and honours. The Government of India conferred "Silp Guru" in 2015. He received the "Lifetime achievement" award in Handicrafts from Government of Odisha in 2016. He was conferred National Award of Chinta 0 Chetana in 2012 by Ministry of Information and Broadcasting, Govt. of India. He received the "NALCO FINE ARTS AWARD-2018.He has certified from PEME AWAM CHOEGAR GYURME LING MONASTERY BIR KANGRA from Government of Himachal Pradesh. Shri Maharana has brought pride and accolades for the country to visited Brazil in South America on the eve of 50 years independence celebration of India in 1997.He has significantly contributed to the promotion of traditional stone crafts of Odisha in countries such as Australia Perth in 1998 and 2000, Malaysia & Singapore in 2003 France Paris in 2007, Italy Milanin-2007 and 2009, South Africa Zimbabwe in 2013. He has demonstrated the craftsmanship skills and enriched the cultural glory of the country under sponsorship of Ministry of textile Govt of India (Development Commissioner (Handicrafts) and Temple of fine arts International Coimbatore, India. Under the leadership of Buddha Guru Dalai Lama he has established many stone crafted Buddha Statues in Bhutan, Himachal Pradesh, Japan, Tibet and Taiwan that has brought him appreciation from many art lovers and Buddhists.



श्री प्रभाकर महारणा

श्री प्रभाकर महारणा "कोणार्क कला" के अध्यक्ष तथा इस संगठन के पारंपरिक पत्थर नक्काशी विषय के सक्रिय अनुदेशक हैं। सृजनात्मकता, एक अभिनव के लिए अनवरत तलाश के साथ संकल्पित एक व्यक्ति अर्थात श्री महाराणा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की पारंपरिक प्रस्तर मूर्तिकला के सिद्धहस्त हैं।

2. आपका जन्म 02 सितम्बर, 1960 में हुआ था। आप उड़ीसा में कोणार्क के प्रसिद्ध सूर्य मंदिर के समीप एक शिल्पकार परिवार से आते हैं। बचपन से ही आपका ड्राइंग और पेंटिग्स की ओर झुकाव था। आपने वर्ष 1977 में भुवनेश्वर स्थित राज्य हस्तशिल्प प्रशिक्षण केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके बाद, आपने भुवनेश्वर में अपनी स्वयं की निर्माण यूनिट का शुभारंभ किया जहां गरीब छात्र मुफ्त भोजन और आवास के साथ प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। कारीगरी में नवीनता के लिए आपके सतत् अनुसंधान ने ओडिशा के पारंपरिक पत्थर शिल्प के विकास में उल्लेखनीय रूप से योगदान किया है। आप अपने व्यवसाय में शीघ्रता से उत्कृष्टता हासिल की और कोणार्क मंदिर के सूर्य नारायण की पत्थर नक्काशी में आपके उत्कृष्ट कार्य के लिए वर्ष 1987 में आपको राज्य पुरस्कार प्रदान किया गया। मथुरा विजय से अन्तर्ग्रहित "कंदर्प हस्ती" कंदर्प हाथी की अवधारणा पर आधारित प्रस्तर मूर्तिकला में आपकी चमत्कारिक कारीगरी के लिए वर्ष 1992 में आपको प्रस्तर मूर्तिकला के संबंध में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाज़ा गया।

3. आपने बहुत ही संगठित तरीके से ओडिशा की प्रस्तर मूर्तिकला को विकसित किया। आपने कोणार्क कला,उत्कल कला हस्तशिल्प सहकारी समिति तथा प्रवाकर सर्जनात्मक कला एवं शिल्प नामक संगठनों की स्थापना की है जिनके अंतर्गत राज्य में पारंपरिक पत्थर संस्कृति एवं रिवाजों के विकास और पत्थर पर नक्काशी करने वाले कारीगरों के हितों की रक्षा के लिए आपके पास कई योजनाएं हैं। अपने नेतृत्व में आपने भुवनेश्वर में स्वयं का प्रस्तर शिल्प संग्रहालय खोला है जहां राज्य के प्रस्तर-शिल्प को सजाया और प्रदर्शित किया जाता है।

4. गुरू-शिष्य परंपरा की परिपाटी को बरकरार रखने के लिए आपने सरकार के सहयोग से और स्वयं की पहल पर गुरू-शिष्य परंपरा के अंतर्गत चार सौ कारीगरों को प्रशिक्षण प्रदान किया है। उनमें से सभी स्वावलंबी हैं और उनमें से कुछ विद्यार्थी होने के बावजूद देश के बाहर कार्य कर रहे हैं। आपके कई विद्यार्थियों ने नई दिल्ली स्थित अक्षरधाम मंदिर के निर्माण में उल्लेखनीय योगदान किया है। आपके ही निर्देशन में, सूरत, गुजरात में सती मात मंदिर और नाइजीरिया में जगन्नाथ मंदिर निर्मित किए गए हैं, आपने हिमाचल प्रदेश और विदेशों में बौद्ध गुरू दलाई लामा की कई पत्थर की मूर्तियां स्थापित की हैं।

5. आपको कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। भारत सरकार ने वर्ष 2015 में आपको "शिल्पगुरू"का सम्मान प्रदान किया है। आपको वर्ष 2016 में ओडिशा सरकार से हस्तशिल्प में "लाइफ टाइम अचीवमेंट" पुरस्कार प्राप्त हुआ। वर्ष 2012 में आपको सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय,भारत सरकार ने चिंता-ओ-चेतना का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया। आपको "नाल्को फाइन आर्ट्स अवार्ड -2016 प्राप्त हुआ। हिमाचल प्रदेश की सरकार से आपको पेमे आवाम छोएगर गुरमे लिंग मोनास्ट्री बीर कांगड़ा का प्रमाण-पत्र प्राप्त हुआ। वर्ष 1997 में भारत के 50 वर्षों के स्वतंत्रता समारोह के अवसर पर आपके दक्षिण अमेरिका स्थित ब्राजील के दौरे से देश को सम्मान और गौरव प्राप्त हुआ। आपने वर्ष 1998 और 2000 में आस्ट्रेलिया-पर्थ, वर्ष 2003 में मलेशिया एवं सिंगापुर, वर्ष 2007 में फ्रांस-पेरिस, वर्ष 2007 और 2009 में इटली-मिलानीन, वर्ष 2013 में दक्षिण-अफ्रीका-जिम्बाव्वे जैसे देशों में ओडिशा की पारंपरिक प्रस्तर-शिल्प के विकास हेतु उल्लेखनीय योगदान किया। वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार [विकास आयुक्त (हस्तशिल्प)] तथा टेम्पल ऑव फाइन आर्ट्स इंटरनेशनल कोयंबतूर, इंडिया के प्रायोजन के अंतर्गत आपने कारीगरी कौशलों का प्रदर्शन किया तथा देश के सांस्कृतिक गौरव को समृद्ध बनाया। बुद्ध गुरू दलाईलामा की अगुआई में आपने भूटान, हिमाचल प्रदेश, जापान, तिब्बत और ताईवान में पत्थर से तैयार की गई कई बुद्ध प्रतिमाएं स्थापित की हैं जिससे आपको कई कला प्रेमियों और बुद्ध अनुयायियों से प्रशंसा प्राप्त हुई है।